साहित्य अकादेमी

राजभाषा सप्ताह : समापन समारोह

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित राजभाषा सप्ताह (14–21 सितंबर 2017) के समापन समारोह का आयोजन दिनांक 21 सितंबर 2017 को किया गया। इस आयोजन में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा डोगरी की प्रतिष्ठित कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव आमंत्रित थे। कार्यक्रम में बाङ्ला कवि सुबोध सरकार की भी विशेष उपस्थिति रही। समारोह में विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पद्मा सचदेव के हाथों नकद पुरस्कार और प्रमाण–पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी की राजभाषा पत्रिका 'आलोक' का लोकार्पण प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, श्रीमती पद्मा सचदेव, सुबोध सरकार एवं साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

स्वागत भाषण करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. राव ने कहा कि एक न एक दिन हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना होगा। हिंदी सीखने–जानने के प्रति हमें उत्सुक होना चाहिए। हमारे कार्यालय के प्रत्येक कर्मी को हिंदी में दक्ष होने की जरूरत है। साथ ही उस दक्षता का प्रयोग करके हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना भी जरूरी है, जिससे अकादेमी भारत सरकार के समस्त कार्यालयों में एक आदर्श के रूप में आए।

इस अवसर पर पद्मा सचदेव ने कहा कि सबसे पहले हमें मातृभाषा ठीक से आनी चाहिए, फिर हम हिंदी अवश्य सीखें। बाद में आवश्यक होने पर कोई अन्य भाषा। हिंदी का वास्तविक दिवस तब होगा, जब हमें हिंदी दिवस मनाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

सभाध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अंग्रेजी नौकरी की भाषा के रूप में भारत में फैली। अब जब हमारा अपना शासन है, हिंदी को राजभाषा के रूप में अवश्य ही अपनाया जाना चाहिए। मेरा मानना है कि सभी मातृभाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं की प्रकृति बहुत विनम्र है। हम संकल्प शक्ति के द्वारा हिंदी बेहतर सीख सकते हैं और उसका ज्यादा से ज्यादा प्रयोग भी कर सकते हैं।

हिंदी संपादक, श्री कुमार अनुपम ने कार्यक्रम के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि सभी अकादेमी कर्मियों से अपेक्षा है कि वे कार्यालय में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें।